उपसंहार

उपसंहार

हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओ कहानियों में पिछले दशकों में अधिक बदलाव आया हैं। उपन्यास एवं कविता की अपेक्षा कहानियों में प्रयोग अधिक किये जा रहे ळें। कहानी आधुनिक संसार की जटीलता, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि परिस्थितियों से सीधी जुड़ी हुई हैं। वैसे देखा जाय तो नई कहानी का मुख्य स्वर केवल "यथार्थ" को अभिव्यक्ति देना ही नहीं है, अपितु नये सिरे से व्यकित, परिवार, समाज, राष्ट्र के आपसी सम्बन्धों को जाँचना भी हैं।

नरेन्द्र कोहली एक प्रगतिशील लेखक हैं, उन्होने सामाजिक समस्याओं एवं प्रश्नों को व्यापक रुप में उठाने का प्रयास किया हैं। उन्होंने वर्तमान समाज एंव परिवार के बदलते-टुटते, बनते-बिगड़ते सम्बन्धों के अनेक पहलुओंपर विचार किया हैं। नई कहानी की विकास यात्रा में कोहली जी की कहानियाँ अपना अलग स्थान रखती हैं। आधुनिक कहानी स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर जा चुकी है। परिणाम स्वरुप सम्पूर्ण समाज का चित्रण करने की अपेक्षा समाज की ईकाई व्यक्ति को जाँचने का प्रयत्न अधिकतर किया जाता हैं। कोहलीजी की प्रथम प्रकाशित कहानी "दो हाथ" मानी जाती हैं। कोहली ने बचपन से ही कहानियों को लिखने का प्रयत्न किया हें। अन्य कहानीकारों की तरह उन्होंने अपनी कहानी यात्रा बड़ी सुझ-बुझ के साथ जारी रखी हैं।

कोहली जी ने प्रायः बदलते हुए जीवन मूल्य तथा बदलते हुए परिवेश को बड़ी तत्परता के साथ चित्रित किया हैं। उन्होंने कहानियों के व्दारा सामाजिक प्रश्नों और समस्याओं को किसी एक ही दृष्टि से न उठोकर उनकी समग्रता एवं व्यापकता में उठाया हैं। लेखक कोहली जीवन के प्रति आस्थावान रहा हैं। उन्होंने व्यक्ति के मन की गहराईयों में उतरकर उसकी छटपटाहट एवं तडपन को अंकित किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय में मैने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का एक लेखा-जोखा प्रस्तुत किया हैं। उपन्यासकार, कहानीकार, व्यंग्यकार, नाटककार, अनुवादक तथा समीक्षक के रुप में कोहली जी ने हिन्दी साहित्य में अपना अलग स्थान निर्माण किया। बचपन से ही उन्हे कठीण परिस्थितियों का समाना करना पड़ा। उन्होंने अपने लेखन में स्थान-स्थापन पर जीवनानुभव की अभिव्यक्ति पर बल दिया है। कोई भी संवेदनशील पाठक उनके उपन्यास में अपनी तसवीर कहीं-न-कही अवश्य देख सकता हैं। अनुभव की प्रामाणिकता और अभिव्यक्ति की क्षमता के कारण स्वातंत्र्योत्तर कालीन हिन्दी कथा साहित्य में उनका अलग

अलग स्थान है। कोहलीजी एक ऐसे कलावादी साहित्यकार है, जिनपर प्रगतिशीलता या सामाजिक यथार्थ का मुखौटा पाया जाता हैं। उनके पास सक्षम प्रतिभा है, यथार्थ को पहचानने को क्षमता हैं। इसीकारण अपने समकालीन कथाकरों के उन्हें महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता हैं।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के व्दितीय अध्याय में कोहली की कहानियों का विकासात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं। नरेन्द्र कोहली नई कहानीकारों के प्रमुख लेखको में से है। 1960 ई. के आस-पास से उनकी कहानियाँ प्रकाशित होने लगीं। लगभर 75 कहानियाँ उनके समग्र कहानियाँ भाग-1 और भाग -2 मे प्रकाशित हुई हैं। विषय की विविधता, आधुनिक समाज की समस्याएँ उनकी कहानियो मे दिखायी देती हैं। कोहली जी अपने आपसे पूराने परिपाठी से अलग रखने में तथा परम्परा का नये सिरे से विकास करने में सदैव सफल रहे हैं। इनकी कहानियों का विश्लेषण करनेपर ज्ञात होता है कि, लेखकने अपनी कहानियों में मध्यवर्गीय मानव को उभारने का प्रयास किया हैं। उनकी कहानियों मे मध्यवर्ग एवं निम्नमध्यवर्ग के विवशता एवं कुष्ठाओं के चित्र अधिक सजीवता के साथ अंकित है। कोहली जी ने अपनी कहानियों में रोजाना व्यवहार में आनेवाली अकृत्रिम भाषाशैली का प्रयोग किया हैं। आधुनिक कथा साहित्य में कोहली जी की कहानी यात्रा सफल एवं समर्थ सिध्द हुई हैं।

तृतीय अध्याय में नरेंन्द्र कोहली जी की कहानियों मे चित्रित समस्याओं को देखा हैं। कोहली जी की कहानियों में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक समस्याएँ देखी हैं। सामाजीक समस्याएँ अलग-अलग आयामों में देखी गयी है - नारी समस्या, प्रेम समस्या, पारिवारिक समस्या, पति-पत्नी सम्बन्ध समस्या, अकेलेपन की समस्या, दिखावटीपन की समस्या, निम्नवर्ग की समस्या, आन्तर्जातीय विवाह की समस्या, टूटते समस्य की समस्या। कोहली जी की कहानियों में नारी समस्या - "दो-ढाई और आठ" इस कहानी में लेखक ने नारी की दुर्बलतापर प्रकाश डाला हैं। नारी कितनी भी पढ़ी लिखी क्यों न हों वह कभी स्वतंत्र नाही हो सकती। "मालिनी" इस कहानी के माध्यम से लेखक ने स्पष्ट किया हैं कि, वर्तमान काल में शिक्षा का प्रचार होने के कारण आज नारी भी पुरुष के कन्धे-से-कन्धे लगार काम करतीं हैं। "भूखेबच्चे: सूखी डाली" कहानी में परिस्थिति की विडंबना को चित्रित किया हैं। "पछतावा" कहानी में बताया गया है कि, नारी विवाह से पूर्व मनचाहा बर्ताव करती है, लेकिन विवाह के पश्चात् उसे अपने पति और घरवालों ने बताए उसी रास्तेपर ही चलना पड़ता हें।

"पिल्लू" कहानी में बताया उसी रास्तेपर ही चलना पड़ता हैं। "पिल्लू" कहानी में बताया गया है कि, आज कल नारी पढ़लिखकर कितना ही ऊँचा स्थान क्यो न प्राप्त करे उसकी ओर उपेक्षा भंव से ही देखा जाना हैं। "दूसरे कगार का निषेध" में नारी के अहम् भावना को जागृत किया हैं।

"दूसरी आया" कहानी में बताया गया है कि, कामकाजी महिला आजे के भंरतीय परिवेश में अपनी आर्थिक स्वतंत्रता को एक विशिष्टता के रुप में ले रहीं हैं, सहजता के रुप में नहीं। "नींद आनेतक" कहानी में बताया गया है कि, अपने देश में आज भी नारी पर अन्याय होता हैं। इसका जिम्मेदार पूर्णतः पुरुष हैं, फिर भी वह नारी को ही दोष देता हैं। इस तरह उपर्युक्त कहानियों में लेखक ने नारी समस्या को चित्रत किया हैं। उनके कहानियों मे प्रेम समस्या – "राजा दशरथ के बेटे" कहानी मे टूटते हुए प्रेम समस्या को उभारा हैं। "गाड़ीवान" कहानी में प्यार के बीच आनेवाली दहेज समस्या को उभारा हैं। "संगिनी" कहानी में कथा–नायक और नायिका को प्यार की कुर्बानी देनी पड़ी हैं। "अन्यलोग भी" कहानी में लेखक ने बताय हैं कि, आज–कल के प्रेमियों मे आत्मविश्वास की कमी हैं। "विरोध" कहानी में समाज से ड़रनेवाले प्रेमियों का चित्रण किया हैं। लेखक के कुछ कहानियों में पारिवारिक समस्याएँ इस प्रकार – "कहानी का अभाव" यह कहानी की संरचना के परम्परागत अकादमीय ढाँचेपर भी प्रश्नचिन्ह लगाती हैं। "लोगो के बच्चे" यह कहानी माँ–बाप के उस मानसिकता की दयोतक है जिसमें अपने बच्चे गुणशून्य ओर दूसरों के बच्चे गुणों की गांठ। "दृष्टिदेश में एकाएक" कहानी में कथानायक की कमजोरी पर प्रकाश डाला हैं। "शट्ल" कहानी में आज के संयुक्त परिवार लगभग टूट गए है और युवा पिढ़ी निरन्तर आत्मकेन्द्रित होती जा रही हैं। इस बात को स्पष्ट किया हैं। "बला", "नमक का कैदी" इन कहानियों में भी लेखक ने पारिवारिक समस्याओं को उभारा हैं। कुछ आर्थिक समस्याएँ– "दो–ढाई और आठ" कहानी में लेखक ने अर्थ के कारण उत्पन्न हुई समस्या को उभारा हैं। "सहारा" कहानी में बताया है कि आज समाजमें बहुत सारे युवक है जो पढ़ना–लिखना चाहते है पर अर्थ के अभाव के कारण वे अपनी इच्छओं का गला घोंटते हैं। "संतुलन" कहानी मे लेखक ने मध्यवर्गीय दाम्पत्य जीवन की समस्या को उभारा हैं। "खर्च डायरी और अस्पताल" कहानी में लेखक ने बताया है कि, असुरक्षा और अभाव व्यक्ति को हिसाबी–किताबी बना देता हैं। "चुभन" कहानी में आधुनिक युग की बढ़ती हुयी अर्थ की समस्या को उभारा हैं। "निर्णय" कहानी में अर्थ बलपर अमीर लोग गरींबों को किस तरफ पिसते है इसका चित्रण किया हैं। कुछ पति–पत्नी सम्बन्ध

समस्या इस प्रकार है - "पूर्णता" कहानी में बताया है कि, समीपी रिश्तेदारों में रक्त-संबंध नहीं रखना चाहिए, इसके कारण बच्चे अपाहिज पैदा होते हैं। "वापसी" कहानी में बताया है कि, पति-पत्नी के एक-दूसरे को न समझने के कारण उनमें अनेक समस्याएँ निर्माण होती हैं।

"वेश्या का नौकर" कहानी में बताया है कि, 'पुरुष के लिए स्त्री का आर्थिक रुप से सहयोगी होना तो काम्य है पर अहं के स्तर पर स्वीकार्य नहीं। "पालतू कबूतर" कहानी में व्दिधा मनस्थिति में फँसे हुऐ व्यक्ति का चित्रण किया हैं। "निचले फटैट में" कहानी में लेखक ने पति-पत्नी सम्बन्ध समस्या को चित्रित किया हैं। "मिल का मॉडल", "पछताव", "नालायक", "इन बच्चों के सदके कहानी मे लेखक ने दिखावढीपन की समस्या को चित्रित किया हैं। आज-कल के खोखले दिखावटीपन को कोहली ने सूक्ष्मता से अपनी कुछ कहानियों में चित्रित किया हैं। "राजा दशरथ के बेटे", "नाबालिग वर", "पराची हथलिचोंपर टिका भविष्य", "रसोई से लौटते पांव", कहानी में लेखक ने विवाह की समस्या को चित्रित किया हैं। "उमड़े दयार में", "दुहराव", "मेरा सार्थी कोई नही हैं। कहानी मे लेखक ने अकेलेपन की समस्या को चित्रित किया हैं। "आहत प्यार" "होनेवाली पतनी", "सीमा के आर-पार" कहानियों मे लेखक ने टूटते सम्बन्ध की समस्या को चित्रित किया हैं। "हिन्दुस्तानी", "हत्यारा" कहानी में सामाजिक समस्या को चित्रित किया हैं। "रसोई से लौटते पांव", कहानी में धार्मिक समस्या को चित्रित किया हैं। "उत्तराधिकार" कहानी में बिगडते हुए पिता-पुत्र सम्बन्ध समस्या को चित्रित किया हैं।

कोहलीजी ने अपने युग का सूक्ष्म एंव वास्तव अध्ययन किया है। अपने युग की समस्याओं को उन्होंने अपने कहानियों में यथार्थ रुप से चित्रित करने का प्रयास किया हैं। अतः आपके प्रायः सभी कहानियों में समाज में चित्रित विभिन्न समस्याओं को उभारा हैं। आपने अपने कहानियों के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक समस्या को बड़ी सूझ-बूझ के साथ उठाया हैं। साहित्यकार समाज का अभिन्न अंग होता हैं। समाज में होनेवाले बदलाव को वह अंकित करता हैं। कोहली जी श्रेष्ठ प्रतिभा के धनी हैं जिन्होंने अपनी कहानियों के व्दारा वास्तविकता के साथ समस्याओं को पकड़ने का प्रयास किया हैं।

परिशिष्ट

नरेन्द्र कोहली का प्रकाशित साहित्य

उपन्यास

1)	पुनरारंभ	सन् 1972
2)	आतंक	सन् 1972
3)	साथ सहा गया दु:ख	सन् 1974
4)	मेरा अपना संसार	सन् 1975
5)	दीक्षा	सन् 1975
6)	अवसर	सन् 1976
7)	जंगल की कहानी	सन् 1977
8)	संघर्ष की ओर	सन् 1978
9)	युध्द	सन् 1979
10)	अभिज्ञान	सन् 1981
11)	आत्मदान	सन् 1983

कहानियाँ

1)	परिणति	सन् 1969
2)	कहानी का अभाव	सन् 1977
3)	दृष्टिदेश में एकाएक	सन् 1979
4)	शटल	सन् 1982
5)	नमक का कैदी	सन् 1983
6)	निचले फलॅट में	सन् 1984
7)	नरेन्द्र कोहली की कहानियाँ	सन् 1984
8)	संचित भूख	सन् 1984

व्यंग्य

1)	एक ओर लाल तिकोन	सन् 1970
2)	पांच एब्सर्ड उपन्यास	सन् 1972
3)	आश्रितों का विद्रोह	सन् 1973

4)	जगाने का अपराध	सन् 1973
5)	मेरी श्रेष्ट व्यंग्य रचनाएं	सन् 1977
6)	आधुनिक लड़की की पीड़ा	सन् 1978
7)	त्रासदियां	सन् 1982

नाटक

1)	शम्बूक की हत्या	सन् 1975
2)	निर्णय रुका हुआ	सन् 1984
3)	हत्यारे	सन् 1985
4)	नींद आने तक	सन् 1990
5)	गारे की दीवार	सन् 1986

आत्मपरक सर्जनात्मक निबंध

1)	नेपथ्य	सन् 1983

बाल–साहित्य

1)	गणित का प्रश्न	सन् 1978
2)	आसान रास्ता	सन् 1984

शोध: आलोचना

1)	प्रेमचंद के साहित्य–सिध्दांत	सन् 1966
2)	कुछ प्रसिध्द कहानियों के विषय में	सन् 1967
3)	प्रेमचंद	सन् 1976
4)	हिंदी उपन्यास: सृजन और सिध्दांत	सन् 1977

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) जैन महेन्द्रकुमार – हिंन्दी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण –

2) कोहली नरेन्द्र – कुछ, नरेन्द्र कोहली के विषय में –
पराग प्रकाशन, दिल्ली – 110 032

3) कोहली नरेन्द्र – समग्र व्यंग्य
किताबघर, नई दिल्ली – 2, प्रथम संस्करण – 1991

4) कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग –1, भाग – 1
पराग प्रकाशन, दिल्ली – 32 प्रथम संस्करण – 1991

5) राय विवेकी – आधुनिक उपन्यास – विविध आयाम
अनिल प्रकाशन, इलाहाबाद – 211 006

6) राय विवेकी – समकालिन हिन्दी उपन्यास
राजीव प्रकाशन, इलाहाबाद – 6

7) उपाध्याय नर्मदाप्रसाद – व्यक्तित्व एवं कृतित्व : नरेन्द्र कोहली
पराग प्रकाशन, दिल्ली – 110 032.